हरिश्चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी

स्नातक बी.ए. (राजनीति विज्ञान)

तृतीय वर्ष

तृतीय प्रश्न पत्र

(अंतर्राष्ट्रीय राजनीति)

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का अर्थ परिभाषा एवं विषय क्षेत्र

Kew-Word - राष्ट्रीय हित,ग़ैरसरकारी संगठन,वैश्वीकरण,उदारीकरण

डॉ. पंकज कुमार सिंह

राजनीति विज्ञान विभाग

विभागाध्यक्ष & एसोसिएट प्रोफेसर

Email - ID pksingh1155@gmail.com

अंतरराष्ट्रीय राजनीति का अर्थ व परिभाषा

मनुष्य अपनी सामाजिक प्रवृत्ति के कारण मनुष्य से उदासीन नहीं रह सकता, उसी तरह मानव का संगठित रूप राज्य भी, अन्य राज्य से उदासीन नहीं रह सकता। अतः राज्यों के मध्य आपसी संबंध राज्यों का स्वाभाविक प्रवृत्ति है। प्रत्येक राज्यों की गतिविधियाँ निश्चित रूप से अन्य राज्यों को प्रभावित करती है। ये प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकते है। क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र "राष्ट्रीय हित" की प्राप्ति की संभावना से ही प्रेरित होकर कार्य करते हैं और प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की अभिव्यक्ति, संवर्धन व भूमिका अपनी शक्ति व संसाधनों के परिपेक्ष में करते हैं। परिणाम स्वरूप राष्ट्रों के बीच संघर्ष व सहयोग दोनों का विकास होता है। जिससे अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति का जन्म होता है।

अतः सामान्य शब्दों में अन्तराष्ट्रीय राजनीति का अर्थ है," *राज्यों के मध्य राजनीति।"* । अतः विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक संबंधों की राजनीति ही अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति है। अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति में राज्यों के मध्य क्रिया और प्रतिक्रिया व उसके विभिन्न आयामों, परिणामों, साधनों, व्यवहारों तथा पूर्वानुमानो का अध्ययन किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के निम्न तीन प्रमुख तत्व है :-

1. राज्यों का अस्तित्व।
2. राज्यों का राष्ट्रीय हित।
3. राष्ट्रीय हित के लिए राष्ट्रीय शक्ति की प्राप्ति, प्रयोग व संघर्ष।

राज्य अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का प्रमुख केंद्र है, परन्तु राज्य के अलावा व्यक्ति, मानवीय व्यवहार, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं,अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, अन्तराष्ट्रीय कानून, गैर राज्य इकाईया व ग़ैरसरकारी संगठन भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के प्रमुख केंद्र है। ये विभिन्न राज्यों के मध्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीति,सांस्कृतिक व भौगोलिक आदि क्षेत्रों में सहयोग का मार्ग प्रशस्त करते है। मतभेद, सहमति, संघर्ष, सहयोग, युद्ध, संधि व शांति अंतरराष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख सहचर हैं। 21वी शताब्दी में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आतंकवाद, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण, मानवाधिकार, वैश्वीकरण, उदारीकरण, मुक्त व्यापार, पूँजी निवेश ,व्यापार असंतुलन व शरणार्थी की समस्या, नवीन विषय क्षेत्र है ।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति की प्रमुख परिभाषाएं

हैंस जे मार्गेंथाऊ के अनुसार -

"अंतरराष्ट्रीय राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है। "

हेराल्ड स्प्राउट के अनुसार -

" स्वतंत्र राज्यों के अपने अपने उद्देश्यों एवं हितों की आपसी विरोध प्रतिरोध या संघर्ष से उत्पन्न उनकी प्रतिक्रिया एवं संबंधों का अध्ययन अंतरराष्ट्रीय राजनीति कहलाता है "

वोन डायक के अनुसार-

" अंतरराष्ट्रीय राजनीति संप्रभुता संपन्न राज्यों की सरकारों के मध्य शक्ति संघर्ष है "

थॉम्पसन के अनुसार -

" राष्ट्रों के मध्य प्रतिस्पर्धा के साथ साथ आपसी संबंधों को सुधारने या खराब करने वाली परिस्थितियों एवं समस्याओं का अध्ययन अंतरराष्ट्रीय राजनीति कहलाता है।"

नॉर्मन डी पामर और होवार्ड सी पार्किंस के अनुसार -

" अंतरराष्ट्रीय संबंध में राष्ट्रीय राज्य,अंतरराष्ट्रीय संग के पारस्परिक संबंधों के अतिरिक्त बहुत कुछ सम्मिलित हैं यह राष्ट्रों के मध्य पाए जाने वाले सभी संबंधों का

समावेश करता है परंतु फिर भी राज्य को ही अंतरराष्ट्रीय समुदाय का केंद्र मानता है । ”

क्विंसी राइट के अनुसार -

“ अंतरराष्ट्रीय संबंध केवल राज्यों के संबंधों को ही नियमित नहीं करता अभी तू विभिन्न समूह जैसे राष्ट्र राज्य गठबंधन क्षेत्र परिसंघ अंतरराष्ट्रीय संगठन औद्योगिक संगठन धार्मिक संगठन को भी शामिल करता है। ”

फेलिक्स ग्रास के अनुसार, “ अंतरराष्ट्रीय राजनीति वास्तव में राष्ट्रों की विदेश नीति का अध्ययन ही है। ”

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की विशेषताएँ

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर अंतरराष्ट्रीय राजनीति की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती है :-

- अंतरराष्ट्रीय राजनीति एक गतिशील व परिवर्तनशील विषय है ।
- अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सिद्धांत और व्यवहार दोनों के तत्व पाए जाते हैं ।
- अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर मानव के मनोव्यवहारिक प्रवृत्ति का प्रभाव पड़ता है।
- राज्य अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का प्रमुख केंद्र है।
- राष्ट्रीय हित अंतरराष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख लक्ष्य होते हैं।
- शक्ति लक्ष्य प्राप्ति का प्रमुख साधन होता है ।

- संघर्ष अंतरराष्ट्रीय राजनीति के दिशा - निर्देशों व गति को निर्धारित करती है।
- अंतरराष्ट्रीय राजनीति में राज्यों के सहयोगात्मक पहलुओं का भी अध्ययन किया जाता है।
- मतभेद, सहमति, संघर्ष, सहयोग, युद्ध, संधि व शांति अंतरराष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख सहचर हैं।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विषय क्षेत्र (Scope)

किसी भी विषय के अध्ययन क्षेत्र का सामान्य आशय यह है कि उस विषय में किन - किन विषय वस्तुओं (Subject Matters) का अध्ययन किया जाता है। जैसे नदी. पहाड़ झरने भूकंप आदि का अध्ययन सामान्य रूप से भूगोल विषय में किया जाता है। उसी तरह अंतरराष्ट्रीय राजनीति विषय के अंतर्गत किन-किन विषय वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है। राजनयिक इतिहास के अध्ययन से प्रारंभ हुआ अंतरराष्ट्रीय राजनीति का विषय क्षेत्र अब काफी विस्तृत हो गया है, खासकर एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित होने के उपरांत।

क्विंसी राइट ने अपनी पुस्तक "*The Study of International Relations" मैं अंतरराष्ट्रीय राजनीति के निम्नलिखित विषय क्षेत्रों का उल्लेख किया है :-*

1. अंतरराष्ट्रीय कानून व मूल्य
2. आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों में राष्ट्रों का पारस्परिक निर्भरता
3. विश्व की प्रमुख क्रियाकलाप, घटनाएँ एवं तनाव

चार्ल्स स्लेशर ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अंतर्गत राज्यों के समस्त अंर्तराज्जीय संबंधों को शामिल किया है।

वास्तव में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अंतर्गत निम्नलिखित विषय क्षेत्र का अध्ययन किया जाता है :-

- **अंतरराष्ट्रीय राजनीति का प्रधान पात्र - राज्य**
- **शक्ति का अध्ययन**
- **अंतरराष्ट्रीय कानून का अध्ययन**
- **राष्ट्रीय हित का अध्ययन**
- **अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं व संगठनों का अध्ययन**
- **सैन्य एवं राजनीतिक गुटों का अध्ययन**
- **युद्ध एवं शांति के गतिविधियों का अध्ययन**
- **अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं गैर राज्य संगठनों का अध्ययन**
- **विदेश नीति व उसके निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन**

अंतरराष्ट्रीय राजनीति एक गतिशील विषय है इसलिए समय-समय पर इसमें सदा नए विषय वस्तु का स्वभाविक आगमन हुआ है। वैश्वीकरण उदारीकरण व प्राइवेटाइजेशन आदि ने भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विषय क्षेत्र विस्तार को प्रभावित किया है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विषय के रूप में विकास

एक अध्ययनगत विषय के रूप में अंतरराष्ट्रीय राजनीति एक नवीन विषय है परंतु इतिहास विषय के अंतर्गत इसका अध्ययन पूर्व में किया जाता रहा है । एक स्वतंत्र विषय के रूप में इसका विकास बीसवीं शताब्दी की उपज हैं। साउथ वेल्स विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय वुडरों विल्सन पीठ की स्थापना 1919 में की गई जिसमें अंतरराष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन प्रारंभ किया गया । प्रसिद्ध इतिहासकार ऐल्फल्ड ज़िमर्न व सी.के.वेबस्टर की सर्वप्रथम नियुक्ति की गई । बाद में इ.एच.कार, पी.ए.रेनॉल्ड, लॉरेंस माल्टिंन, टी.इ.इवांज आदि ने पीठ को सुशोभित किया ।

केनेथ थाम्पसन ने "रिव्यू आफ पॉलिटिक्स" (1962) में प्रकाशित अपनी लेख में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विकास के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया परंतु आज हम इसे पांच चरणों में विभाजित कर सकते हैं :-

1. कूटनीतिक इतिहास के प्रभुत्व काल (प्रारंभ से 1919 तक)
2. घटनाओं व समस्याओं के अध्ययन का काल (1919 से 1939)
3. राजनीतिक सुधारवाद का युग (1939 से 1945)
4. सिद्धांतीकरण के प्रति आग्रह (1945 से 1991)
5. वैश्वीकरण व नए सैद्धांतिकरण का युग (1991 से 2003)

कूटनीतिक इतिहास के प्रभुत्व काल

यह प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व का कालखंड है। इस कालखंड में अंतरराष्ट्रीय राजनीति एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित नहीं था, बल्कि इतिहास विषय के अंतर्गत एक प्रश्न पत्र के रूप में ही स्थापित मात्र था। इतिहासकारों का प्रभुत्व था, जिसमें कूटनीतिज्ञों व राजनयिकों के कार्यों व युद्ध का वर्णनात्मक अध्ययन किया जाता था। इसलिए अंतरराष्ट्रीय राजनीति के इस कालखंड को *"राजनयिक इतिहास के वर्णन"* का कालखंड भी करते हैं।

ई.एच.कार के अनुसार, " *प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व अंतरराष्ट्रीय संबंधों का इतिहास केवल युद्ध, सैनिक व राजनयिकों के इतिहास का अध्ययन मात्र था* "

समसामयिक घटनाओं व समस्याओं के अध्ययन का काल

सन 1919 से 1938 के बीच के कालखंड में दो समानान्तर वैचारिक धाराओं का विकास हुआ। इस कालखण्ड को अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विकास का प्रारंभिक दौर माना जाता है। यह प्रथम विश्व युद्ध से द्वितीय विश्व युद्ध के बीच का कालखंड है। इस कालखंड में अंतरराष्ट्रीय राजनीति "*एक स्वतंत्र अनुशासन*" के रूप में स्थापित होती है। इस कालखंड में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में ऐतिहासिकता के स्थान पर समसामयिकता के अध्ययन पर बल

दिया जाने लगा, परंतु इस कालखंड में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सार्वभौमिक सिद्धांतों का अभाव था, जिससे विषय के विकास पर बहुत ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा।

राजनीतिक सुधारवाद का युग

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के इस युग का प्रारंभ वास्तव में द्वितीय कालखंड के दौरान ही हो चुका था। इस कालखंड में आदर्शवादी अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर बल दिया गया। अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के गठन, अंतरराष्ट्रीय शांति व युद्ध की समस्याओं का समाधान पर बल दिया गया। इस युग में कानूनी व नैतिक उपागम का जमकर प्रयोग किया गया। अंतरराष्ट्रीय राजनीति के इस कालखंड की सबसे बड़ी उपलब्धि जिनेवा संधि व राष्ट्र संघ(1919-1939) की स्थापना रही।

परंतु जिस आदर्श को स्थापित करने के लिए इस कालखंड पर बल दिया गया वह द्वितीय विश्व युद्ध के कारण पूर्णत: समाप्त हो गया ।

सिद्धांतीकरण के प्रति आग्रह

द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व से ही अंतरराष्ट्रीय राजनीति के आदर्शवादी स्वरूप को चुनौती मिलती रही परंतु 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के चतुर्थ चरण प्रारंभ हुआ माना जाता है। इस कालखंड

में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में अंतरराष्ट्रीय कानून व संगठन के साथ साथ, मानव व राज्यों के व्यवहार तथा उन्हें प्रभावित करने वाली शक्तियों, आदि का भी अध्ययन किया जाने लगा। इसी कालखंड में संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन हुआ। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सैद्धांतिकरण पर बल के परिणाम स्वरूप यथार्थवाद, व्यवस्था सिद्धांत शक्ति संतुलन का सिद्धांत, संचार सिद्धांत, क्रीडा सिद्धांत, सौदेबाजी का सिद्धांत, शांति अनुसंधान सिद्धांत, विश्व व्यवस्था प्रतिमान आदि प्रतिमानों का विकास हुआ। केनेथ वाल्ज, मार्गेंथाऊ, क़्वींसी राइट, मार्टन काप्लान, स्टैंनले हाफमैन, ऑरेंन यंग आदि प्रमुख सिद्धांतकार इस कालखंड की देन है।

वैश्वीकरण व नए सैद्धांतिकरण का युग

यह अंतरराष्ट्रीय राजनीति का नवीन दौर है, जिसका प्रारंभ 1990 के दशक के बाद प्रारंभ होता है और 21वीं शताब्दी के उपरांत तीव्र गति से अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में विकास होता है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अनेक नवीन विषयों व मुद्दों का आगमन होता है जैसे आतंकवाद, पर्यावरणीय मुद्दे, मानवाधिकार, विकास, व्यापार असंतुलन, डब्ल्यू टी.ओ, मानव तस्करी आदि।

मॉडल प्रश्नावली (Model questionnaire)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. *The Study of International Relations* नामक पुस्तक के लेखक है ?

   a . क्विंसी राइट b. मार्गेंथाऊ

   c. केनेथ वाल्ज d. मार्टन काप्लान

2. वुडरों विल्सन पीठ की स्थापना कब हुई ?

   a .1919 b. 1920

   c. 1921 d. 1945

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वुडरों विल्सन पर टिप्पणी कीजिए।
2. अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विषय क्षेत्र को स्पष्ट करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अंतरराष्ट्रीय राजनीति को परिभाषित कीजिए और उसके विषय क्षेत्र का वर्णन करें
2. "अन्तराष्ट्रीय राजनीति राज्यों के मध्य राजनीति है।" विवेचना कीजिए
3. अंतरराष्ट्रीय राजनीति के एक स्वतंत्र विषय के रूप में विकास का वर्णन करें

संदर्भ सूची

References

1. तपन बिस्वास (2016),अंतरराष्ट्रीय संबंध (द्वितीय संस्करण), ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली
2. महेंद्र कुमार(2017) अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सैद्धांतिक पक्ष,शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी
3. डॉ. बी एल फडिया (2019), अंतरराष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन,आगरा
4. पुष्पेश पंत,(2018) 21 वीं शताब्दी में अंतरराष्ट्रीय संबंध टाटा मैकग्रा हिल पब्लिकेशन नई दिल्ली
5. https://drive.google.com/file/d/1cBcPqP11Cm4UcoPuTKStybmi-wDFkK8Y/view
6. https://www.drishtiias.com/hindi/images/dlp-demo/ukpsc/gs-pack-4/International-Relations.pdf
7. http://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/MAPS-101.pdf
8. http://uprtou.ac.in/other_pdf/UGPS_04.pdf

Declaration

“ The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/ commercial purpose is strictly prohibited. The users of the content shall not distribute,disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this content is authentic and best as per knowledge.”

THANKS